*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।** [14]

1. गंगा जी की दो धाराओं में से एक का नाम नीलधारा है, तो दूसरी का क्या नाम है?
   (A) गंगाधारा (B) हरिधारा (C) श्री गंगा जी (D) शिवधारा
   उत्तर : (C) श्री गंगा जी
2. लेखक ने ग्रहण में किसके साथ स्नान किया?
   (A) दीवान कृपा राम (B) पंडे (C) कल्लू जी मित्र (D) संपादक
   उत्तर : (C) कल्लू जी मित्र
3. विल्वेश्वर महादेव की मूर्ति किस पर्वत पर है?
   (A) विल्वपर्वत (B) कनखल (C) नीलधारा (D) ज्वालापुर
   उत्तर: (A) विल्वपर्वत
4. गंगा के जल की तुलना किससे की गई है?
   (A) अमृत (B) चीनी के पने को बर्फ में जमाया गया हो
   (C) दूध (D) शहद
   उत्तर : (B) चीनी के पने को बर्फ में जमाया गया हो
5. जले हुए वृक्ष भी किस रूप में लोगों के काम आते हैं?
   (A) राख (B) कोयले और राख (C) लकड़ी (D) पत्ते
   उत्तर : (B) कोयले और राख
6. पक्षी नगर के किन लोगों से निडर होकर चहचहाते हैं?
   (A) बच्चों (B) बधिकों (C) यात्रियों (D) वैरागियों
   उत्तर : (B) बधिकों
7. पंडे और दुकानदार कहाँ से आते हैं?
   (A) कनखल व ज्वालापुर (B) नीलधारा (C) विल्वपर्वत (D) हरिद्वार
   उत्तर: (A) कनखल व ज्वालापुर
8. पंडे कैसे होते हैं?
   (A) असंतुष्ट (B) विलक्षण संतोषी (C) लालची (D) झगड़ालू
   उत्तर : (B) विलक्षण संतोषी
9. लेखक कहाँ पर रुके थे?
   (A) धर्मशाला में (B) मठ में
   (C) दीवान कृपा राम के बंगले पर (D) कनखल में
   उत्तर : (C) दीवान कृपा राम के बंगले पर
10. लेखक के अनुसार, सोने की थाल के भोजन से बढ़कर सुख किस भोजन में था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

(A) दुकान के भोजन में (B) घर के भोजन में

(C) पत्थर पर परोसकर किए गए भोजन में (D) होटल के भोजन में

उत्तर : (C) पत्थर पर परोसकर किए गए भोजन में

11. वृक्ष किसकी भाँति घाम, ओस और वर्षा सहते हैं?

(A) तपस्वियों (B) साधुओं (C) यात्रियों (D) कवियों

उत्तर : (B) साधुओं

12. हरिद्वार का कौन-सा सामान महीन और उज्ज्वल बनता है?

(A) जनेऊ (B) कपड़े (C) बर्तन (D) कुशा

उत्तर: (A) जनेऊ

13. हरिद्वार में गंगा जी का पाट (किनारा) कैसा है?

(A) बहुत बड़ा (B) बहुत चौड़ा (C) बहुत छोटा (D) बहुत गहरा

उत्तर : (C) बहुत छोटा

14. लेखक ने पत्र के अंत में किसे संबोधित किया है?

(A) राजा (B) दीवान (C) संपादक महाशय (D) मित्र

उत्तर : (C) संपादक महाशय

*** रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित रूप से कीजिए।** [10]

15. गंगा नदी का जल यहाँ बहुत ही _____ माना जाता है।

उत्तर : पवित्र

16. हरि की पैड़ी पर लोग _____ करने आते हैं।

उत्तर : स्नान

17. हरिद्वार उत्तराखंड राज्य का एक _____ नगर है।

उत्तर : पवित्र

18. हरिद्वार को _____ का प्रवेश द्वार कहा जाता है।

उत्तर : देवभूमि

19. हरिद्वार में प्रति बारहवें वर्ष _____ का मेला लगता है।

उत्तर : कुम्भ

20. गंगा आरती का दृश्य बहुत ही _____ होता है।

उत्तर : भव्य

21. हरिद्वार धार्मिक स्थल होने के साथ-साथ _____ के लिए भी प्रसिद्ध है।

उत्तर : पर्यटन

22. हरिद्वार में तीर्थयात्री मंदिरों में _____ चढ़ाते हैं।

उत्तर : फूल-माला

23. हरिद्वार में दूर-दूर से आने वाले लोग गंगा में स्नान कर अपने _____ धोते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

उत्तर : पाप

24. हरिद्वार में प्रवेश करते ही लोगों को एक पवित्र और _____ वातावरण का अनुभव होता है।

उत्तर : दिव्य

*** प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए।** [15]

25. कनखल तीर्थ की कौन-सी घटना प्रसिद्ध है?

उत्तर : कनखल तीर्थ की दक्ष के यज्ञ और सती के शरीर भस्म करने की घटना प्रसिद्ध है।

26. कुशा में किस चीज की सुगंध आती है?

उत्तर : कुशा में दालचीनी और जावित्री की अच्छी सुगंध आती है।

27. गंगा की पवित्र धारा को किसकी कीर्ति की लता कहा गया है?

उत्तर : गंगा की पवित्र धारा को राजा भगीरथ की उज्ज्वल कीर्ति की लता कहा गया है।

28. गंगा जी अपना नाम 'नदी' किस बात से सत्य करती हैं?

उत्तर : गंगा जी अपना नाम 'नदी' जल के वेग के बहुत अधिक शब्द से सत्य करती हैं।

29. चंडिका देवी की मूर्ति कहाँ स्थापित है?

उत्तर : चंडिका देवी की मूर्ति नीलधारा के तट पर स्थित एक चुटीले पर्वत के शिखर पर स्थापित है।

30. पर्वतों पर फैली वल्लियों की तुलना किससे की गई है?

उत्तर : पर्वतों पर फैली वल्लियों की तुलना सज्जनों के शुभ मनोरथों से की गई है।

31. यहाँ कौन से लोग नहीं रहते हैं?

उत्तर : यहाँ इच्छा क्रोध की खानि जैसे मनुष्य नहीं रहते हैं।

32. लेखक ने किस प्रकार का भोजन किया?

उत्तर : लेखक ने गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर पर परोसा हुआ भोजन किया।

33. लेखक ने कौन से पाँच मुख्य तीर्थों का उल्लेख किया है?

उत्तर : लेखक ने हरिद्वार, कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल का उल्लेख किया है।

34. वर्षा के कारण हरियाली को क्या बताया गया है?

उत्तर : वर्षा के कारण हरियाली को हरे गलीचा की बिछायत बताया गया है।

35. वृक्ष पत्थर मारने से क्या देते हैं?

उत्तर : वृक्ष पत्थर मारने से फल देते हैं।

36. हरिद्वार में प्रवेश करने से मन कैसा हो जाता है?

उत्तर : हरिद्वार में प्रवेश करने से मन शुद्ध हो जाता है।

37. लेखक के अनुसार, यह भूमि किनके योग्य है?

उत्तर : लेखक के अनुसार, यह भूमि विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है।

38. लेखक ने अंत में संपादक से क्या अनुरोध किया है?

उत्तर : लेखक ने संपादक से उनके पत्र को स्थान देने का अनुरोध किया है।

39. भोजन करते समय लेखक के चित्त में क्या उदय होता था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

उत्तर : भोजन करते समय लेखक के चित्त में ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **[20]**

40. लेखक ने पर्वतों पर खड़े वृक्षों की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर : लेखक ने पर्वतों पर खड़े वृक्षों की तुलना साधुओं से की है। वे वृक्ष एक पैर पर खड़े होकर तपस्या करते हुए प्रतीत होते हैं और साधुओं की तरह ही घाम, ओस और वर्षा को अपने ऊपर सहते हैं।

41. "अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं।" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का भाव यह है कि वृक्षों का जीवन बहुत ही धन्य है क्योंकि वे हमेशा दूसरों के काम आते हैं। वे फल, फूल, छाया और लकड़ी से लेकर जल जाने के बाद भी कोयले और राख से लोगों की हर जरूरत पूरी करते हैं।

42. लेखक ने गंगा के जल का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर : लेखक ने गंगा के जल को अत्यंत शीतल और मीठा बताया है। वे कहते हैं कि इसका स्वाद ऐसा लगता है, मानो चीनी के पने को बर्फ में जमा दिया गया हो। जल का रंग स्वच्छ और श्वेत है।

43. शीतल वायु किस प्रकार लोगों को पावन करती है?

उत्तर : लेखक के अनुसार, गंगा के जल के वेग से उत्पन्न होने वाली शीतल वायु, नदी के पवित्र जल के छोटे-छोटे कणों को अपने साथ ले आती है। जब यह वायु लोगों को स्पर्श करती है, तो उन पवित्र कणों के कारण वे पावन हो जाते हैं।

44. कनखल तीर्थ का क्या ऐतिहासिक महत्त्व है?

उत्तर : कनखल तीर्थ का ऐतिहासिक महत्त्व यह है कि यहाँ किसी समय राजा दक्ष ने एक बड़ा यज्ञ किया था। इसी यज्ञ के दौरान शिव जी का अपमान होने पर उनकी पत्नी सती ने अपना शरीर यज्ञ की अग्नि में भस्म कर दिया था।

45. ग्रहण के समय लेखक ने क्या-क्या किया?

उत्तर : लेखक ने बताया है कि ग्रहण की रात्रि को उन्होंने अपने मित्र कल्लू जी के साथ बड़े आनंदपूर्वक गंगा में स्नान किया। इसके बाद उन्होंने दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया।

46. हरि की पैड़ी में क्या विशेष बात है?

उत्तर : हरि की पैड़ी एक पक्का घाट है जहाँ स्नान होता है। यहाँ की विशेष बात यह है कि वैरागियों द्वारा कई मठ और मंदिर बनाए जाने के बावजूद, इस स्थान पर केवल गंगा जी को ही एकमात्र देवता के रूप में पूजा जाता है।

47. लेखक ने हरिद्वार की कुशा के बारे में क्या विलक्षण बात कही है?

उत्तर : लेखक ने बताया है कि हरिद्वार की कुशा सबसे विलक्षण होती है क्योंकि उसमें से दालचीनी और जावित्री जैसी सुगंध आती है। यह सुगंध इस बात का प्रमाण है कि यह भूमि कितनी पुण्यभूमि है।

48. लेखक के अनुसार, हरिद्वार में पंडे कैसे होते हैं?

उत्तर : लेखक बताते हैं कि हरिद्वार के पंडे बहुत ही विलक्षण और संतोषी हैं। वे एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं। यहाँ पंडे दुकानदार कनखल व ज्वालापुर से आते हैं।

49. लेखक ने अपने यात्रा अनुभव के दौरान भोजन के बारे में क्या बताया है?

उत्तर : लेखक ने गंगा तट पर रसोई बनाकर, जल के अत्यंत निकट पत्थर पर परोसे गए भोजन का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि उस समय के भोजन का सुख सोने की थाल में किए गए भोजन से भी कहीं अधिक था।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **[18]**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

50. लेखक ने किस प्रकार अपने यात्रा वृत्तांत को समाप्त किया है और संपादक से क्या अपेक्षा की है?

उत्तर : लेखक ने अपने वृत्तांत को संपादक महाशय को संबोधित करते हुए समाप्त किया है। वे कहते हैं कि वे शरीर से तो वहाँ से आ गए हैं, लेकिन उनका मन अभी भी हरिद्वार में ही निवास करता है। वे अपने इस लेख के माध्यम से पाठकों को उस पुण्यभूमि का वर्णन सुनाकर अब मौन धारण करते हैं। अंत में, वे संपादक से यह अपेक्षा करते हैं कि वह उनके इस पत्र को अपने समाचार पत्र में स्थान देंगे, जिससे यह अनुभव अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके।

51. लेखक ने अपनी हरिद्वार यात्रा के दौरान किन-किन बातों का उल्लेख किया है, जिनसे उनके मन में ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय हुआ?

उत्तर : लेखक ने बताया कि वे दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर ठहरे थे, जहाँ चारों ओर से शीतल हवा आती थी। उन्होंने ग्रहण के समय मित्र कल्लू जी के साथ आनंदपूर्वक स्नान किया। सबसे महत्त्वपूर्ण अनुभव गंगा के तट पर पत्थर पर भोजन करना था। इस सरल और पवित्र माहौल में, जहाँ झगड़े-लड़ाई का नाम भी नहीं था, उनके मन में बार-बार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

52. लेखक ने गंगा जी के बहाव के बारे में क्या बताया है और इसकी दो धाराओं का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर : लेखक बताते हैं कि गंगा जी का पाट (नदी का किनारा) बहुत छोटा है, लेकिन उनका वेग (प्रवाह) बहुत बड़ा है। वे कहते हैं कि जल के वेग का शब्द इतना अधिक होता है कि गंगा जी अपना नाम 'नदी' सत्य करती हैं। एक जगह गंगा जी दो धाराओं में बँट जाती हैं - एक का नाम नीलधारा है और दूसरी का नाम श्री गंगा जी ही है। इन दोनों धाराओं के बीच में एक सुंदर नीचा पर्वत भी स्थित है।

53. लेखक ने पर्वतों पर स्थित वृक्षों और गंगा के जल-जंतुओं के बारे में क्या-क्या वर्णन किया है?

उत्तर : लेखक बताते हैं कि पर्वतों पर बड़े-बड़े वृक्ष ऐसे खड़े हैं, मानो एक पैर पर तपस्या कर रहे हों। वे साधुओं की तरह ही घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं और हमेशा दूसरों के काम आते हैं। इसी तरह, गंगा के जल-जंतु भी उस पवित्र और स्वच्छ जल में आनंदपूर्वक क्रीड़ा करते हैं। पक्षी भी नगर के बधिकों से निडर होकर वृक्षों पर चहचहाते हैं। यह वर्णन प्रकृति के एक सुंदर और सामंजस्यपूर्ण चित्र को प्रस्तुत करता है।

54. लेखक ने हरिद्वार को किस प्रकार की भूमि बताया है और क्यों?

उत्तर : लेखक ने हरिद्वार को 'पुण्यभूमि' और 'साक्षात विरागमय' भूमि बताया है। इसके कई कारण हैं। यहाँ की घास भी सुगंधित है। यहाँ हर वस्तु अपूर्व और अनोखी है। यह भूमि ऐसे शांत और पवित्र वातावरण से परिपूर्ण है कि यहाँ रहने से मन शुद्ध हो जाता है। लेखक मानते हैं कि यह भूमि उन साधुओं और विरक्तों के लिए सबसे उत्तम है, जो भौतिक संसार से दूर होकर शांति की खोज में रहते हैं।

55. लेखक ने हरिद्वार को "शुद्ध निर्मल साधुओं के सेवन योग्य तीर्थ" क्यों बताया है? इसके पीछे के क्या कारण हैं?

उत्तर : लेखक ने हरिद्वार को शुद्ध निर्मल साधुओं के योग्य इसलिए बताया है क्योंकि यहां का वातावरण पवित्र और शांत है। वे कहते हैं कि यहाँ "बखेड़ा कुछ नहीं है"। लेखक के अनुसार, यहाँ इच्छा और क्रोध की भावना वाले मनुष्य नहीं रहते हैं। यहाँ तक कि यहाँ के पंडे भी बहुत संतोषी हैं। इस प्रकार, यह स्थान आध्यात्मिक शांति और वैराग्य के लिए उपयुक्त है, जहाँ व्यक्ति बिना किसी विघ्न के ईश्वर का ध्यान कर सकता है।

*** निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए।** **[35]**

मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है कि मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने से ही मन शुद्ध हो जाता है। यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है जिन पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है और बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं। अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।

56. प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है, यह किस स्थान के लिए कहा गया है?

(अ) हरिद्वार (ब) पर्वत

(स) वन (द) स्वर्ग

57. हरिद्वार की भूमि कितने ओर से सुंदर हरे-भरे पर्वतों से घिरी है?

(अ) दो (ब) तीन

(स) चार (द) पाँच

58. वृक्ष साधुओं की भाँति क्या सहते हैं?

(अ) शीत (ब) धूप

(स) घाम, ओस और वर्षा (द) वायु

59. लेखक ने वृक्षों की तुलना साधुओं से क्यों की है?

60. गद्यांश के अनुसार, वृक्ष लोगों की क्या-क्या जरूरतें पूरी करते हैं?

उत्तर : 1. (अ) हरिद्वार

2. (ब) तीन

3. (स) घाम, ओस और वर्षा

4. वृक्ष साधुओं की तरह ही एक पैर पर खड़े होकर घाम, ओस और वर्षा को सहते हुए तपस्या करते हैं।

5. गद्यांश के अनुसार, वृक्ष फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़ जैसी चीजें देकर लोगों की जरूरतें पूरी करते हैं।

यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है। विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं। यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं। श्री गंगा जी का पाट भी बहुत छोटा है पर वेग बड़ा है, तट पर राजाओं की धर्मशाला यात्रियों के उतरने के हेतु बनी हैं और दुकानें भी बनी हैं पर रात को बंद रहती हैं।

61. वैरागियों ने क्या बनवाए हैं?

(अ) दुकानें (ब) धर्मशालाएँ

(स) मठ मंदिर (द) घाट

62. गंगा जी के पाट (किनारे) की क्या विशेषता बताई गई है?

(अ) बहुत बड़ा है (ब) बहुत गहरा है

(स) बहुत छोटा है (द) बहुत चौड़ा है

63. रात को क्या बंद रहती हैं?

(अ) धर्मशालाएँ (ब) मठ

(स) दुकानें (द) मंदिर

64. हरि की पैड़ी में स्नान क्यों होता है?

65. लेखक ने किस बात को "विशेष आश्चर्य का विषय" कहा है?

उत्तर : 1. (स) मठ मंदिर

2. (स) बहुत छोटा है

3. (स) दुकानें

4. हरि की पैड़ी एक पक्का घाट है जो विशेष रूप से स्नान के लिए बनाया गया है। यह हरिद्वार का प्रमुख स्नान स्थल है।

5. लेखक ने इस बात को आश्चर्य का विषय कहा है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं और दूसरा कोई देवता नहीं है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है। निदान यहाँ जो कुछ है, अपूर्व है और यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है। और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ और अपने वर्णन द्वारा आपके पाठकों को इस पुण्यभूमि का वृत्तांत विदित करके मौनावलंबन करता हूँ। निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।

66. यहाँ की किस चीज को विलक्षण बताया गया है?
(अ) फूल (ब) कुशा
(स) पत्तियाँ (द) मिट्टी
67. कुशा में किस चीज़ की सुगंध आती है?
(अ) गुलाब (ब) चमेली
(स) दालचीनी, जावित्री (द) केसर
68. लेखक के अनुसार, यह कैसी भूमि है?
(अ) पुण्य भूमि (ब) साधारण
(स) शुष्क (द) कठोर
69. लेखक ने किसे संबोधित करते हुए अपनी बात समाप्त की है?
70. "मौनावलंबन करता हूँ" का क्या अर्थ है?

उत्तर : 1. (ब) कुशा
2. (स) दालचीनी, जावित्री
3. (अ) पुण्य भूमि
4. लेखक ने "संपादक महाशय" को संबोधित करते हुए अपनी बात समाप्त की है, जिससे पता चलता है कि यह लेख किसी समाचार पत्र या पत्रिका के लिए लिखा गया है।
5. "मौनावलंबन करता हूँ" का अर्थ है कि लेखक अब अपने वर्णन को समाप्त करके चुप हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने हरिद्वार के बारे में अपनी पूरी बात कह दी है।

वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी। एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगाजी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता-सी दिखाई देती है। जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है, रंग जल का स्वच्छ और श्वेत है और अनेक प्रकार के जल-जंतु कल्लोल करते हुए।

71. हरियाली को किस चीज की बिछायत कहा गया है?
(अ) फूलों की (ब) पत्तों की
(स) हरे गलीचा की (द) घास की
72. गद्यांश में किस नदी का वर्णन है?
(अ) यमुना (ब) सरस्वती
(स) गंगा (द) गोदावरी
73. गंगा को किसकी कीर्ति की लता कहा गया है?
(अ) राजा हरिश्चंद्र (ब) राजा भगीरथ
(स) राजा दशरथ (द) राजा दुष्यंत
74. गद्यांश में जल की दो मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
75. जल का रंग कैसा बताया गया है?

उत्तर : 1. (स) हरे गलीचा की
2. (स) गंगा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

3. (ब) राजा भगीरथ
4. गद्यांश के अनुसार, जल की दो मुख्य विशेषताएँ हैं कि वह अत्यंत शीतल (ठंडा) और मिष्ट (मीठा) होता है।
5. जल का रंग स्वच्छ (साफ) और श्वेत (सफेद) बताया गया है।

गंगा जी अपना नाम नदी सत्य करती हैं अर्थात् जल के वेग का शब्द बहुत होता है और शीतल वायु नदी के उन पवित्र छोटे-छोटे कनों को लेकर स्पर्श ही से पावन करता हुआ संचार करता है। यहाँ पर श्री गंगा जी की दो धारा हो गई हैं- एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से, इन दोनों धारों के बीच में एक सुंदर नीचा पर्वत है और नील धारा के तट पर एक छोटा-सा सुंदर चुटीला पर्वत है और उसके शिषर पर चण्डिका देवी की मूर्ति है।

76. श्री गंगा जी कितनी धाराओं में बँट गई हैं?
(अ) एक (ब) दो
(स) तीन (द) अनेक
77. गंगा जी की दो धाराओं के बीच में क्या है?
(अ) एक बड़ा पर्वत
(ब) एक सुंदर नीचा पर्वत
(स) एक द्वीप
(द) एक पुल
78. चुटीले पर्वत के शिषर पर किसकी मूर्ति है?
(अ) शिव जी
(ब) गंगा मैया
(स) चण्डिका देवी
(द) हनुमान जी
79. 'गंगा जी अपना नाम नदी सत्य करती हैं अर्थात् जल के वेग का शब्द बहुत होता है' इस पंक्ति से लेखक क्या कहना चाहता है?
80. शीतल वायु का स्पर्श कैसा अनुभव देता है?

उत्तर : 1. (ब) दो
2. (ब) एक सुंदर नीचा पर्वत
3. (स) चण्डिका देवी
4. लेखक कहना चाहता है कि गंगा नदी के जल का प्रवाह इतना तेज है कि उससे बहुत जोरदार ध्वनि उत्पन्न होती है, जो 'नदी' शब्द (जिसका एक अर्थ ध्वनि भी है) को सार्थक सिद्ध करती है।
5. शीतल वायु का स्पर्श पावन (पवित्र) करने वाला होता है क्योंकि वह नदी के पवित्र जल के कणों को अपने साथ लेकर आता है।

भारामल जैकृष्णदास खत्री यहाँ के प्रसिद्ध धनिक हैं। हरिद्वार में यह बखेड़ा कुछ नहीं है और शुद्ध निर्मल साधुओं के सेवन योग्य तीर्थ है। मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है। मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।

81. हरिद्वार को किसके सेवन योग्य तीर्थ बताया गया है?
(अ) राजाओं के
(ब) धनिकों के
(स) शुद्ध निर्मल साधुओं के
(द) वैरागियों के
82. हरिद्वार जाते ही लेखक का चित्त कैसा हो गया?
(अ) उदास
(ब) चकित

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

(स) प्रसन्न और निर्मल
(द) शांत
83. लेखक किस व्यक्ति के घर पर रुके थे?
(अ) भारामल जैकृष्णदास खत्री
(ब) दीवान कृपा राम
(स) राजा
(द) वैरागी
84. लेखक को अपना रुकने का स्थान कैसा लगा?
85. "यह बखेड़ा कुछ नहीं है" पंक्ति से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर : 1. (स) शुद्ध निर्मल साधुओं के
2. (स) प्रसन्न और निर्मल
3. (ब) दीवान कृपा राम
4. लेखक को अपना रुकने का स्थान (दीवान कृपा राम का बंगला) उस क्षेत्र में ठहरने के लिए एक उचित और योग्य स्थान लगा।
5. इस पंक्ति से लेखक का आशय है कि हरिद्वार में किसी तरह का अनावश्यक शोरगुल, विवाद या उपद्रव नहीं है, जिससे वहाँ का वातावरण शांत और पवित्र बना रहता है।

इस क्षेत्र में पाँच तीर्थ मुख्य हैं हरिद्वार, कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल। हरिद्वार तो हरि की पैड़ी पर नहाते हैं, कुशावर्त्त भी उसी के पास है, नीलधारा वही दूसरी धारा, विल्व पर्वत भी पास ही एक सुहावना पर्वत है जिस पर विल्वेश्वर महादेव की मूर्ति है और कनखल तीर्थ इधर ही है, यह कनखल तीर्थ बड़ा उत्तम है। किसी काल में दक्ष ने यहीं यज्ञ किया था और यहीं सती ने शिव जी का अपमान न सहकर अपना शरीर भस्म कर दिया।
86. इस क्षेत्र में कितने मुख्य तीर्थ बताए गए हैं?
(अ) चार (ब) पाँच
(स) तीन (द) छह
87. विल्वपर्वत पर किसकी मूर्ति स्थापित है?
(अ) ब्रह्मा जी (ब) शिव जी
(स) विल्वेश्वर महादेव (द) विष्णु जी
88. किस तीर्थ को 'बड़ा उत्तम' बताया गया है?
(अ) हरिद्वार (ब) कनखल
(स) नीलधारा (द) कुशावर्त
89. गद्यांश में पाँच मुख्य तीर्थों के नाम लिखिए।
90. नीलधारा और कुशावर्त्त तीर्थ कहाँ स्थित हैं?

उत्तर : 1. (ब) पाँच
2. (स) विल्वेश्वर महादेव
3. (ब) कनखल
4. गद्यांश में पाँच मुख्य तीर्थों के नाम हैं - हरिद्वार, कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल।
5. नीलधारा गंगा की दूसरी धारा है और कुशावर्त्त तीर्थ हरि की पैड़ी के पास ही स्थित है।

----- -----

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in